IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शिक्षा में हो रहे परिवर्तन का समाजशास्त्रीय अध्ययन

(डॉ शारदा कुमारी , असिस्टेंट प्रोफेसर , समाजशास्त्र विभाग , वाई बी एन यूनिवर्सिटी रांची , झारखंड)

सारांश

शिक्षा वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति के भीतर मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक क्षमताओं को विकसित करता है । यह व्यक्ति को आत्मनिर्भर, चरित्रवान और पूर्ण बनाता है, जिससे वह जीवन के संघर्षों का सामना कर सके और समाज के लिए उपयोगी बन सके। ताकि जिसके द्वारा एक समाज अपने संचित ज्ञान कौशल और मूल्यों को एक पीढ़ी से दूसरे तक पहुंचाता रहे है। समय के साथ मनुष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा की पद्धतियों में बदलाव हो रहा है। नई शिक्षा नीति इस बदलाव का एक अच्छा उदाहरण है। नई शिक्षा नीति (एनईपी) भारतीय सरकार द्वारा बनाई गई एक योजना है जिसका उद्देश्य छोटे बच्चों से लेकर कॉलेज के छात्रों तक सभी विद्यार्थियों के लिए शिक्षा में सुधार करना है। इसके अंतर्गत नई स्कूल संरचना जिसमे 5+3+3+4 प्रणाली है ,अधिक विषय विकल्प है इसलिए छात्र अपनी पसंद के विषय चुन सकते हैं, जैसे कला और विज्ञान एक साथ। कौशल आधारित शिक्षा जिसमें कोडिंग, संगीत और खेल जैसे व्यावहारिक कौशल अध्ययन का हिस्सा है । अधिक डिजिटल शिक्षा के लिए ऑनलाइन शिक्षा और डिजिटल उपकरणों का उपयोग किया जा रहा है ।

समाजशास्त्र की दृष्टि में शिक्षा एक संसाधन है जिसमे भाषा कुशलता एवं ज्ञान सम्मिलित होता है। इस संसाधन को एक या अनेक विशेषज्ञ शिक्षार्थियों को प्रदान करते हैं एवं बदले में कुछ प्राप्त करते हैं इसलिए शिक्षक एवं शिक्षार्थी का संबंध व्यावसायिक होता है। वर्तमान समय में शिक्षा के दरवाजे सभी के लिए खुले हैं। वर्तमान समय में शिक्षा को नया स्वरूप मिला है । कोरोना काल के बाद से ऑनलाइन शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है । इस प्रकार स्पष्ट है कि समय के साथ लोगों की आवश्यकता है बढ़ेगी और आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आगे भी परिवर्तन होते रहेगा।

मुख्य बिंदु – शिक्षा, परिवर्तन, नई शिक्षा नीति , ऑनलाइन शिक्षा।

विधि – द्वितीयक स्रोत

उद्देश्य – शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे परिवर्तन का अध्ययन करना।

भूमिका

व्यापक दृष्टि से शिक्षा का अर्थ उन सभी अनुभवों से है, जिन्हें बालक विभिन्न परिस्थितियों में अर्जित करता है। इस तरह 'शिक्षा' जीवनपर्यन्त चलने की प्रक्रिया है। बालक प्राकृतिक वातावरण के साथ अनुकूलन करता है। उम्र बढ़ने के साथ ही साथ वह बालक सामाजिक तथा आध्यात्मिक वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करते समय कई अर्जित अनुभव प्राप्त करता है। इस तरह के अर्जित अनुभव शिक्षा कहलाते हैं। सीखने तथा सिखाने की प्रक्रिया लगातार चलती रहती है। व्यापक दृष्टि में व्यक्ति शिक्षक तथा शिष्य दोनों ही हैं। इस शिक्षा प्रक्रिया में व्यक्ति पर किसी तरह का अंकुश नहीं होता है। शिक्षा यापक अर्थ को स्पष्ट करते हुए प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री टी. रेमण्ट ने लिखा है, "शिक्षा विकास का वह क्रम है जो बाल्यावस्था से परिपक्वावस्था तक चलता है एवं उसमें मनुष्य अपने आपको आवश्यकतानुसार धीरे-धीरे भौतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक वातावरण के अनुकूल बना लेता है|" इस तरह अर्जित अनुभवों के आधार पर अपने को विभिन्न वातावरण के साथ अनुकूलन करने की क्षमता का विकास करना ही शिक्षा है।शिक्षा के व्यापक अर्थ में शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है।

डम्बिल के अनुसार, "शिक्षा के व्यापक अर्थ में वे सभी प्रभाव आते हैं, जो मानव को बाल्यावस्था से लेकर मृत्युपर्यन्त तक प्रभावित करते हैं।

मैकेन्जी के अनुसार, "व्यापक अर्थ में शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जो जीवनपर्यन्त चलती है तथा जीवन के हर अनुभव से उसमें वृद्धि होती है।" शिक्षाशास्त्रियों के कथन से स्पष्ट है कि शिक्षा सिर्फ घर अथवा विद्यालय तक ही सीमित नहीं है, शिक्षा का क्षेत्र बहुत विस्तृत है।

लॉक का कथन भी इसी विचार की पुष्टि करता है, "जीवन ही शिक्षा है तथा शिक्षा ही जीवन है।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि शिक्षा एक ऐसी सामाजिक तथा गतिशील प्रक्रिया है, जो व्यक्ति के जन्मजात गुणों का विकास करके, उसके व्यक्तित्व को निखारती है एवं सामाजिक वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करने के योग्य बनाती है।

व्यक्ति को जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त तक शिक्षा की जरूरत बनी रहती है। हर क्षण उसका प्रभाव किसी न किसी रूप में अवश्य उपलब्ध रहता है।

शिक्षा किसी भी समाज की आधारशिला होती है, और यह लगातार बदलते समय के साथ विकसित होती रहती है। पिछले कुछ वर्षों में, भारतीय शिक्षा प्रणाली में व्यापक और मौलिक परिवर्तन देखने को मिले हैं, जिसका उद्देश्य छात्रों को 21वीं सदी की चुनौतियों और अवसरों के लिए तैयार करना है। ये परिवर्तन न केवल पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियों से संबंधित हैं, बल्कि शिक्षा के दर्शन और संरचना को भी नया रूप दे रहे हैं।शिक्षा वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति के भीतर पहले से मौजूद शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक क्षमताओं को बाहर निकालकर उसे आत्मनिर्भर, चरित्रवान और पूर्ण बनाती है, जिससे वह जीवन के संघर्षों का सामना कर सके और समाज के लिए उपयोगी बन सके।

शिक्षा के प्रकार – शिक्षा के मुख्य रूप से दो प्रकार हैं।1) औपचारिक शिक्षा ,2) अनौपचारिक शिक्षा।

1) औपचारिक शिक्षा – विद्यालयों, विश्वविद्यालयों में सुनियोजित पाठ्यक्रम के तहत प्राप्त शिक्षाको औपचारिक शिक्षा की श्रेणी में रखा गया है।

2) अनौपचारिक शिक्षा – जीवन के अनुभवों और दैनिक गतिविधियों से मिलने वाली शिक्षा (जैसे, नैतिक शिक्षा, धर्म) को अनौपचारिक शिक्षा की श्रेणी में रखा गया है।

शिक्षा के मुख्य पहलू निम्नलिखित हैं।

1) ज्ञान और कौशल – शिक्षा विभिन्न विषयों का ज्ञान और तकनीकी दक्षता प्रदान करती है, जो रोजगार और आत्मनिर्भरता के लिए ज़रूरी है।

2) नैतिक और चारित्रिक विकास – शिक्षा नैतिक मूल्यों, सही आचरण और सामाजिक जिम्मेदारियों का बोध कराती है, जिससे व्यक्ति एक अच्छा नागरिक बनता है।

3) व्यक्तित्व निर्माण – यह व्यक्ति के बौद्धिक, मानसिक और भावनात्मक पहलुओं को मजबूत करती है, जिससे उसका व्यक्तित्व निखरता है।

4) सामाजिक विकास – शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति समाज के नियम एवं संस्कृति को सीखता है और सामाजिक स्थिरता व विकास में योगदान देता है।

5) परिवर्तन का माध्यम – शिक्षा स्वास्थ्य, आजीविका और सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार लाने वाला एक शक्तिशाली माध्यम है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि शिक्षा ज्ञान और कौशल, नैतिक चरित्र एवं विकास, व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य

1) शिक्षा का लक्ष्य व्यक्ति के अंदर छिपी शक्ति, ज्ञान और प्रतिभा को उजागर करना है, न कि केवल जानकारी भरना।

2) आत्मनिर्भरता और चरित्र निर्माण को शिक्षा का मुख्य उद्देश्य के रूप में रखा गया है।

3) समग्र विकास अर्थात् शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक का विकास करना चाहिए।

4) एकाग्रता का महत्व – ज्ञान प्राप्त करने और जीवन में सफल होने के लिए एकाग्रता (ध्यान) की क्षमता विकसित करना शिक्षा का एक अनिवार्य हिस्सा है।

5) मनुष्य निर्माण – उनका उद्देश्य ऐसी शिक्षा देना था जो सशक्त, जागरूक और आत्म-सचेत मनुष्य का निर्माण करे, जो समाज के लिए भी उपयोगी हो (राष्ट्र-निर्माण)।

6) व्यावहारिक और सार्वभौमिक – शिक्षा को व्यावहारिक जीवन से जोड़ना चाहिए, सभी के लिए सुलभ होनी चाहिए (जाति, धर्म, लिंग का भेद किए बिना), और इसमें लोककल्याण की भावना होनी चाहिए।

प्राचीन काल में पूरी दुनिया में शिक्षा का स्वरूप आज की तुलना में बहुत अलग था। उस समय शिक्षा केवल जानकारी इकट्ठा करने के लिए नहीं, बल्कि संस्कृति, धर्म और अस्तित्व के कौशल (Survival Skills) को बचाने के लिए थी।

दुनिया के विभिन्न हिस्सों में प्राचीन शिक्षा प्रणाली की झलक नीचे दी गई है:

1. प्राचीन भारत : आध्यात्मिक और समग्र शिक्षा के लिए प्रसिद्ध था ।भारत में शिक्षा का केंद्र गुरुकुल थे। यहाँ शिक्षा का मुख्य आधार वेद और उपनिषद थे। शिक्षा का उद्देश्य 'मोक्ष' और चरित्र निर्माण था। प्रमुख संस्थान में नालंदा और तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय दुनिया के पहले अंतरराष्ट्रीय शिक्षण केंद्र थे, जहाँ तर्क, खगोल विज्ञान और चिकित्सा पढ़ाई जाती थी।

2. प्राचीन यूनान : बौद्धिक और शारीरिक संतुलन के लिए प्रसिद्ध थी यूनान (ग्रीस) में दो अलग-अलग तरह की प्रणालियाँ प्रसिद्ध थीं। यहाँ कला, साहित्य, दर्शन (Philosophy) और राजनीति पर जोर दिया जाता था। सुकरात, प्लेटो और अरस्तू जैसे महान दार्शनिक यहीं से निकले। यहाँ शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य सैनिक बनाना था। बच्चों को बचपन से ही कठोर शारीरिक प्रशिक्षण और युद्ध कला सिखाई जाती थी।

3. प्राचीन चीन: नैतिकता और सरकारी सेवा के लिए प्रसिद्ध थी ।चीन की शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से कन्फ्यूशियस के विचारों पर आधारित थी। यहाँ शिक्षा का मुख्य उद्देश्य सरकारी नौकरियों के लिए युवाओं को तैयार करना था। नैतिकता, इतिहास और कविता पर अधिक ध्यान दिया जाता था ताकि एक अनुशासित समाज बन सके।

4. प्राचीन मिस्र : व्यावसायिक और धार्मिक ज्ञान मुख्य था मिस्र की शिक्षा बहुत ही व्यावहारिक थी। मिश्र के समाज में 'लिखने वालों' का बहुत सम्मान था। बच्चों को लिपि , गणित और इंजीनियरिंग सिखाई जाती थी ताकि वे पिरामिड निर्माण और करने का हिसाब रख सकें। उच्च शिक्षा मंदिरों में पुजारियों द्वारा दी जाती थी।

5. मेसोपोटामिया: लेखन की शुरुआत यही से मानी जाती है । दुनिया की सबसे पहली लेखन प्रणालियों में से एक 'क्यूनीफॉर्म' यहीं विकसित हुई। यहाँ के स्कूलों को 'एडुबा' कहा जाता था, जहाँ छात्रों को मिट्टी की तख्तियों पर लिखना सिखाया जाता था।

इस प्रकार विश्व के विभिन्न हिस्सों से शिक्षा के प्रणाली और व्यवस्था के बारे में मुख्य जानकारी प्राप्त होती है जो यह दर्शाती है कि शिक्षा हर समाज में अत्यंत आवश्यक है इसके द्वारा ही समाज के निर्माण का कार्य संपन्न होता है। भारत की शिक्षा प्रणाली पर अगर ध्यान दिया जाए तो यहां गुरुकुल शिक्षा और विश्वविद्यालय शिक्षा प्रसिद्ध था भारत का शिक्षा इस स्तर तक ऊंचा था कि विदेशों से भी लोग यहां शिक्षक ग्रहण करने आते थे। परंतु मुगल आक्रमण को के कारण नालंदा विश्वविद्यालय की पुस्तकालयों को जला दिया गया ताकि भारत का प्राचीन ज्ञान खत्म हो सके।

बदलते समय के साथ सभी देशों में शिक्षा व्यवस्था की स्टार में बदलाव आया है , भारत भी इस परिवर्तन प्रणाली से पीछे नहीं रहा भारत की भी शिक्षा व्यवस्था में बदलाव स्पष्ट देखने को मिल जाता है। भारत एक ऐसा देश है जहां की संस्कृति मिश्रित है क्योंकि यहां अलग-अलग राज्यों और शासको। शासको का शासन रहा जो अपने शासनकाल में शिक्षा की व्यवस्था को बदलते रहे राजाओं के काल में हिंदू राजाओं के काल में जहां संस्कृत को प्राथमिकता दी गई वहीं मुगल काल में उर्दू को अधिक प्राथमिकता मिली उसके पश्चात अंग्रेजी

शासन काल में अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली की शुरुआत हुई । स्वतंत्रता के पश्चात भारत में इस अंग्रेजी शिक्षा पर आधारित प्रणाली पर आधारित शिक्षा का विकास होता रहा।

समाजशास्त्र की दृष्टि में शिक्षा एक संसाधन है जिसमे भाषा कुशलता एवं ज्ञान सम्मिलित होता है। इस संसाधन को एक या अनेक विशेषज्ञ शिक्षार्थियों को प्रदान करते हैं एवं बदले में कुछ प्राप्त करते हैं इसलिए शिक्षक एवं शिक्षार्थी का संबंध व्यावसायिक होता है। शिक्षा संसाधन, उपकरण एवं शक्ति की चेरी है। जिसके पास शक्ति होती है वह अपने अनुसार शिक्षा को बदलता है और डालता भी है। शासन के बदलते ही शिक्षा भी बदल जाती है उदाहरण स्वरूप बंगाल में शासन गठबंधन ने रविंद्र नाथ ठाकुर के सहज पाठ को पाठ्यक्रम से हटा दिया। जैसे इतिहास में मुगलों के शासन को महान बढ़कर प्रदर्शित किया जाता है और हिंदुस्तान के पुराने राजाओं को किताबों के सिलेबस से हटा दिया गया है। इस बात को प्रदर्शित करती है कि शिक्षा को शासन करने वाला अपने अनुसार परिवर्तित कर देता है।

कोविड-19 के दौरान वर्चुअल लर्निंग एक सामान्य प्रक्रिया बन गई है कोरोना के बाद शिक्षा में जो परिवर्तन आया उसे कुछ लोगों को फायदा तो कुछ छात्रों को नुकसान भी हुआ है। जिनके पास पैसा है उन्हें इंटरनेट के माध्यम से शिक्षा लेना आसान हुआ परंतु जिनके पास पैसा का अभाव है उनके पास इंटरनेट से शिक्षा लेना कठिन था ऑनलाइन शिक्षा के दौरान बच्चे इंटरनेट के माध्यम से उपस्थित रहते थे जिससे उनका संपूर्ण विकास होना भी संभव नहीं हो पा रहा था। परंतु यह परिवर्तन एक विकास की दिशा में है ऐसा इसलिए कह सकते हैं क्योंकि लोगों में इंटरनेट सीखने की भीम बधाई और लोग आधुनिकता की ओर अधिक प्रबल हुए। इसका परिणाम यह है कि वर्तमान में लोग जागरूक हुए हैं जिससे तकनीकी शिक्षा का स्तर बढ़ा है।

शिक्षा में परिवर्तन

सर्वप्रथम शिक्षा को आत्म-ज्ञान एवं आत्म-प्रकाश के साधन के रूप में जाना जाता था। आवश्यकतानुसार धीरे धीरे शिक्षा का अर्थ एवं स्वरूप बदलता गया।

आधुनिक काल में शिक्षा शब्द का प्रयोग तीन रूपों में किया जाता है -

(1) ज्ञान हेतु,

(2) मानव के शरीर तथा मानसिक व्यवहार में परिवर्तन के लिए प्रक्रिया हेतु,

(3) पाठ्यचर्या के एक विषय हेतु।

शिक्षा समाज को आकार प्रदान करता है। शिक्षा के परिवर्तित होते स्वरूप समाज में परिवर्तन को प्रदर्शित करते हैं।

परिवर्तन समाज का नियम है जो निरंतर चलता है। शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन के अंतर्गत ही आता है। सामाजिक परिवर्तन सरल शब्दों में सामाजिक संरचना में परिवर्तन है। सामाजिक परिवर्तन सामाजिक संगठनों सामाजिक क्रिया सामाजिक प्रतिकृति एवं सामाजिक प्रक्रियाओं की किसी भी पक्ष में किसी संशोधन विकल्पता को कहते हैं। किस प्रकार सामाजिक परिवर्तन से हमारा तात्पर्य केवल उन परिवर्तनों से है जो सामाजिक संगठन में होते हैं अर्थात समाज की संरचना और प्रकार में होते हैं। शिक्षा भी समाज की संरचना का एक अहम पहलूहै। यह परिवर्तन विकास और प्रगति के लिए किए जाते हैं जो आने वाली नई पीडिया की आवश्यकताओं के पूर्ति हेतु आवश्यकहै। नई शिक्षा नीति भी इसी परिवर्तन का एक हिस्सा है।

नई शिक्षा नीति

नई शिक्षा नीति 2020 भारत की शिक्षा नीति है जिसे भारत सरकार द्वारा 29 जुलाई 2020 को घोषित किया गया और 30 जुलाई 2020 से जारी किया गया। यह एक ऐसी योजना है जिसका उद्देश्य छोटे बच्चों से लेकर कॉलेज के छात्रों तक सभी विद्यार्थियों के लिए शिक्षा में सुधार करना है। इस नीति में 5+3+3+4 संरचना पर आधारित है।

5+3+3+4 संरचना का अर्थ

5 साल (फाउंडेशन स्टेज) – इसमें 3 साल के प्री-स्कूल (आंगनवाड़ी/प्ले स्कूल) और कक्षा 1-2 शामिल हैं, जो 3 से 8 साल के बच्चों के लिए है.

3 साल (प्रिपेरेटरी स्टेज): कक्षा 3-5 के लिए, 8 से 11 साल के बच्चों के लिए.

3 साल (मिडिल स्टेज): कक्षा 6-8 के लिए, 11 से 14 साल के बच्चों के लिए, जिसमें व्यावसायिक शिक्षा और इंटर्नशिप शुरू होगी.

4 साल (सेकेंडरी स्टेज): कक्षा 9-12 के लिए, 14 से 18 साल के बच्चों के लिए, जिसमें विषयों में लचीलापन और गहन अध्ययन शामिल है।

शिक्षा की नई नीति के महत्वपूर्ण बिंदु

* नई स्कूल संरचना – पुरानी 10+2 प्रणाली के स्थान पर अब 5+3+3+4 प्रणाली लागू होगी , जिसका अर्थ है कि बच्चे 3 वर्ष की आयु से ही सीखना शुरू कर देंगे।

* अधिक विषय विकल्प – छात्र अपनी पसंद के विषय चुन सकते हैं, जैसे कला और विज्ञान एक साथ।

* मातृभाषा में शिक्षा – छोटे बच्चे कक्षा 5 तक अपनी भाषा में पढ़ सकते हैं।

* रटने के बजाय समझ पर जोर – स्कूल रटने के बजाय समझ पर अधिक ध्यान केंद्रित करेंगे।

* कौशल-आधारित शिक्षा – कोडिंग, संगीत और खेल जैसे व्यावहारिक कौशल अध्ययन का हिस्सा होंगे।

* कॉलेज प्रवेश के लिए एक सामान्य परीक्षा – कई प्रवेश परीक्षाओं के बजाय, कॉलेज प्रवेश के लिए एक सामान्य परीक्षा आयोजित की जाएगी।

* अधिक डिजिटल शिक्षा – बेहतर शिक्षा के लिए ऑनलाइन शिक्षा और डिजिटल उपकरणों का उपयोग किया जाएगा।

निष्कर्ष

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक समाज अपने संचित ज्ञान कौशल और मूल्यों को एक पीढ़ी से दूसरे तक पहुंचाता है। शिक्षा को बाल रचनात्मक अभिव्यक्ति बढ़ाने और कलात्मक क्षमता बढ़ाने के लिए साधन और अवसर प्रदान करना चाहिए। व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्त्व का विकसित करने वाली प्रक्रिया है।

समाजशास्त्र की दृष्टि में शिक्षा एक संसाधन है जिसमे भाषा कुशलता एवं ज्ञान सम्मिलित होता है। इस संसाधन को एक या अनेक विशेषज्ञ शिक्षार्थियों को प्रदान करते हैं एवं बदले में कुछ प्राप्त करते हैं इसलिए शिक्षक एवं शिक्षार्थी का संबंध व्यावसायिक होता है। वर्तमान समय में शिक्षा के दरवाजे सभी के लिए खुले हैं।

शिक्षा संसाधन, उपकरण एवं शक्ति की चेरी है। जिसके पास शक्ति होती है वह अपने अनुसार शिक्षा को बदलता है और डालता भी है। शासन के बदलते ही शिक्षा भी बदल जाती है उदाहरण स्वरूप बंगाल में शासन गठबंधन ने रविंद्र नाथ ठाकुर के सहज पाठ को पाठ्यक्रम से हटा दिया। जैसे इतिहास में मुगलों के शासन को महान बढ़कर प्रदर्शित किया जाता है और हिंदुस्तान के पुराने राजाओं को किताबों के सिलेबस से हटा दिया गया है। इस बात को प्रदर्शित करती है कि शिक्षा को शासन करने वाला अपने अनुसार परिवर्तित कर देता है। वर्तमान समय में सिलेबस में परिवर्तन हो रहा है और हमारे पुराने संस्कृति को शामिल किया जा रहा है और जो वास्तविक सच्चाई है उसे शामिल करने का प्रयास किया जा रहा है। यह परिवर्तन का मुख्य कारण इंटरनेट के माध्यम से जागरूकता ही है । ऑनलाइन शिक्षा के दौरान बच्चे इंटरनेट के माध्यम से उपस्थित रहते थे जिससे उनका संपूर्ण विकास होना भी संभव नहीं हो पा रहा था। परंतु यह परिवर्तन एक विकास की दिशा में है ऐसा इसलिए कह सकते हैं क्योंकि लोगों में इंटरनेट सीखने की होड़ मची है और लोग आधुनिकता की ओर अधिक प्रबल हुए। इसका परिणाम यह है कि वर्तमान में लोग जागरूक हुए हैं जिससे तकनीकी शिक्षा का स्तर बढ़ा है।

सुझाव

मेरा सुझाव यह है कि शिक्षा से संबंधित जो भी नीतियां बना रही है उन नीतियों को लागू करने के लिए जमीनी स्तर से कार्य करना आवश्यक है। आधुनिक शिक्षा के लिए आधुनिक शिक्षा से संबंधित उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है अतः सरकार को पहले सरकारी स्कूलों और कॉलेज में भी मुक्त में उपकरणों की सुविधा प्रदान करनी चाहिए। वर्तमान में स्थिति ऐसी है कि शिक्षा ऑनलाइन हो चुकी है परंतु कुछ ऐसे लोग हैं जिनके पास इतने पैसे नहीं है कि वह ऑनलाइन शिक्षा के लिए आधुनिक उपकरण खरीद सके इसलिए मेरा सुझाव यह है कि शिक्षा को सिर्फ ऑनलाइन नहीं बनना चाहिए । हमें शिक्षा के ऐसे रूप को विकसित करना चाहिए जो सर्वांगीण विकास कर सके।

संदर्भ सूची

1) यादव रामजी लाल, (2019), "समाजशास्त्र", रमेश पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली ,पेज 154

2) हुसैन मुजतबा, प्रारंभिक समाजशास्त्र,(2008) , जवाहर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स , नई दिल्ली , पेज 355 से 356

3) APA Style: Altekar, A. S. (1944). Education in Ancient India. Nand Kishore & Bros.

4) Mookerji, R. K. (1947). Ancient Indian Education: Brahmanical and Buddhist. Motilal Banarsidass.

5) Castle, E. B. (1967). Ancient Education and Happiness. Penguin Books.

https://hazaribag.nic.in/hi/%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0 %A4%97/%E0%A4%B6%E0%A4%BF%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%B7%E0%A4%BE/

https://leverageedu.com/discover/school-education/essay-on-new-education-policy/

https://pmc.ncbi.nlm.nih.gov/articles/PMC8445757/

https://www.mpboardonline.com/answer/xamstudy/b-ed-bhaarat-mein-shiksha-star-samasya-evam-mudde/2.html